हिंदी का वैश्विक परिदृश्य

डॉ० सतीश कुमार,
गाँव व डाकघर मदीना गिंधराण,
तहसील महम जिला रोहतक

जैसा कि हम सभी जानते हैं कि वर्तमान युग वैश्वीकरण का युग है। विज्ञान एवं तकनीक के जरिये पूरी दुनिया एक विश्वग्राम में तब्दील हो चुकी है। विज्ञान एवं तकनीक ने सभी स्थलीय एवं भौगोलिक दूरियों को समाप्त कर दिया है। इस समय सम्पूर्ण ''विश्व व्यवस्था आर्थिक और भौगोलिक आधार पर ध्रुवीकरण तथा पुनर्संघटना की प्रक्रिया से गुजर रही है। ऐसी स्थिति में विश्व की शक्तिशाली राष्ट्रों में महत्त्व का क्रम भी बदल रहा है। अगर हम विगत तीन शताब्दियों पर विचार करें तो कई रोचक निष्कर्ष पा सकते हैं। यदि अठारहवीं सदी आस्ट्रिया और हंगरी के वर्चस्व की रही है तो उन्नीसवीं शती ब्रिटेन और जर्मनी के वर्चस्व का साक्ष्य देती है। इसी तरह बीसवीं शताब्दी अमेरिका एवं सोवियत संघ के वर्चस्व के रूप में विश्व नियति का निदर्शन करने वाली रही है। आज स्थिति यह है कि लगभग विश्व समुदाय दबी जुबान में ही सही, यह कहने लगा है कि इक्कीसवीं सदी भारत और चीन की होगी। . . . आज भारत और चीन विश्व की सबसे तीव्र गति से उभरने वाली अर्थव्यवस्थाओं में से हैं तथा विश्व स्तर पर इसकी स्वीकार्यता और महत्ता स्वतः बढ़ रहीं है।''[1] सम्पूर्ण विश्व में जब भारतवर्ष इतनी उन्नति कर रहा है तो स्वाभाविक है कि इस देश की भाषा का महत्त्व भी स्वतः बढ़ रहा है। आज हिन्दी भारतवर्ष की राष्ट्रभाषा से विस्तार पाकर विश्वभाषा बनने की प्रक्रिया में है। वह विश्वपटल पर निरन्तर छा रही है। अभिव्यक्ति, सामर्थ्य और साहित्य की दृष्टि से हिंदी विश्व की सर्वाधिक समर्थ भाषा है।

आधुनिक युग में तो हिन्दी हमारी राष्ट्रीय पहचान बन गई है। राजाराममोहनराय, केशवचन्द्र सेन, महात्मा गाँधी, काका कालेलकर, डॉ० राजेन्द्र प्रसाद आदि महापुरूषों एवं विभिन्न संस्थाओं ने हिन्दी के प्रचार–प्रसार के लिए अत्यन्त महत्वपूर्ण कार्य किए हैं। इन सभी के प्रयासों और अपनी लोकप्रियता के कारण हिन्दी भाषा को 14 सितम्बर, 1949 को भारतीय संविधान में राजभाषा के पद से सुशोभित किया गया। हिन्दी भारतवर्ष की मातृभाषा, सम्पर्क भाषा और राजभाषा की सीमा को लांघकर आज विश्वभाषा बन गई है। हिन्दी को अपने इस मुकाम पर पहुँचने के लिए कम्प्यूटर जगत, शिक्षा क्षेत्र, ज्ञान–विज्ञान और तकनीकी के क्षेत्र से भी होकर गुजरी है। यह हिन्दी भाषा की महत्ता को ही प्रदर्शित करता है कि आज वेबसाइट से लेकर इंटरनेट तक हिन्दी भाषा में उपलब्ध हैं।

भारतवर्ष में ''सन् 1961 और 1971 की जनगणनाओं में मातृभाषा के रूप में 1652 भाषाओं की गणना की थी। यदि हमस्थानीय और क्षेत्र विशेष की भाषाओं को छोड़ भी दें, तो मुख्य भाषाओं की संख्या 22 है, जिसके अंतर्गत देश की लगभग 90 प्रतिशत जनसंख्या आ जाती है। . . . भाषा की विविधता भारतीय समाज की विलक्षणता है। ये भाषाएं अपने–अपने क्षेत्र में अपनी सांस्कृतिक विशेषताओं के साथ प्रयुक्त होती रही हैं और अपने क्षेत्र के बाहर भाषा क्षेत्र के लिए हिंदी भाषा का प्रयोग होता रहा है।''[2] आज हिंदी विश्व के सभी महाद्वीपों तथा महत्त्वपूर्ण राष्ट्रों में किसी–न–किसी रूप में प्रयुक्त होती है। यदि बोलने वालों की संख्या को आधार बनाया जाए तो हिंदी चीन की मन्दारिन भाषा को पछाड़कर विश्व की सबसे बड़ी भाषा बन गई है। ''हिन्दी भाषा–भाषियों का विश्व जनसंख्या में बढ़ता हुआ प्रतिशत भी इस बात का प्रमाण है कि विश्व स्तर

पर हिन्दी भाषा–भाषियों की विश्व में राजनीतिक, सामाजिक तथा व्यावसायिक प्रतिष्ठा बढ़ रही है और बहुभाषा–भाषी भारत को समझने के लिए हिन्दी का ज्ञान निरन्तर आवश्यक होता जा रहा है।''[3] डॉ० जयन्तीप्रसाद नौटियाल अपने शोध अध्ययन के निष्कर्ष रूप में लिखते हैंकि ''विश्व–भर में हिन्दी जानने वाले सबसे अधिक हैं। चीनी भाषा अर्थात् मन्दारिन जानने वालों की संख्या हिन्दी के काफी पीछे है। आज जनसंख्या के हिसाब से विश्व में हिन्दी जानने वालों की संख्या 1200 मिलियन है तथा विश्व में मन्दारिन जानने वाले 1050 मिलियन हैं।''[4]

हिन्दी की शाब्दिक और आर्थिक संरचना प्रयुक्तियों के आधार पर सरल व जटिल दोनों हैं। ''हिन्दी और देवनागरी दोनों ही पिछले कुछ दशकों में परिमार्जन व मानकीकरण की प्रक्रिया से गुजरी हैं जिससे उनकी संरचनात्मक जटिलता कम हुई है। हम जानते हैं कि विश्व मानव की बदलती चिन्तनात्मकता तथा नवीन जीवन स्थितियों को व्यंजित करने की भरपूर क्षमता हिन्दी भाषा में है बशर्ते इस दिशा में अपेक्षित बौद्धिक तैयारी तथा सुनियोजित विशेषज्ञता हासिल की जाए। आखिर, उपग्रह चैनल हिन्दी में प्रसारित कार्यक्रमों के जरिए यही कह रहे हैं। आज 'डिस्कवरी चैनल', 'नेशनल ज्योग्राफिक चैनल' तथा 'दी कार्टून चैनल' अतिशय ज्ञानवर्धक सूचनाएँ प्रसारित कर रहे हैं। फिर भी, यह सत्य है कि हिन्दी में अंग्रेजी के स्तर की विज्ञान और प्रौद्योगिकी पर आधारित पुस्तकें नहीं हैं। उसमें ज्ञान कांड से सम्बन्धित विषयों पर उच्चस्तरीय सामग्री की दरकार है। विगत कुछ वर्षों से इस दिशा में उचित प्रयास हो रहे हैं। अभी हाल ही में महात्मा गांधी अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय वर्धा द्वारा हिन्दी माध्यम में एम०बी०ए० तथा एल०एल०बी० का पाठ्यक्रम आरम्भ किया गया।''[5] 3 सितम्बर 2017 को सोनीपत के हिन्दू कन्या महाविद्यालय में हरियाणा ग्रन्थ अकादमी, पंचकूला के निदेशक विजय दत्त शर्मा ने एक दिवसीय अन्तरराष्ट्रीय संगोष्ठी में यह घोषणा की कि ''हरियाणा तकनीकी शिक्षा के लिए विशेषज्ञों का पैनल तैयार किया जाएगा, जो पालीटेक्निक के सभी विषयों की किताबें हिंदी में तैयार करेंगे।''[6] इसके लिए केंद्रीय वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली आयोग की ओर से प्रोजेक्ट तैयार कर लिया गया है। यानी अब पॉलीटेक्निक की पढ़ाई भी हिंदी में होगी। ''इसी क्रम में 'इकोनॉमिक टाइम्स' तथा 'बिजनेस स्टैंडर्ड' जैसे अखबार हिन्दी में प्रकाशित होकर उसमें निहित सम्भावनाओं का उद्घोष कर रहे हैं। 'इंडिया टुडे' तथा 'आउटलुक' जैसी पत्रिकाएँ हिन्दी में प्रकाशित होकर अपनी बदली हुई नियति का निदर्शन कर रही हैं। पिछले कई वर्षों में यह भी देखने में आया कि 'स्टार न्यूज' जैसे चैनल जो अंग्रेजी में आरम्भ हुए थे, वे विशुद्ध बाजारीय दबाव के चलते पूर्णतः हिन्दी चैनल में रूपान्तरित हो गए। साथ ही, 'ई०एस०पी०एन०' तथा 'स्टार स्पोर्ट्स' जैसे खेल चैनल भी हिन्दी में कमेन्टरी देने लगे हैं। यह हिन्दी का परम सौभाग्य है कि वह उपग्रह द्वारा प्रसारित चैनलों के जरिए अन्तरिक्ष मार्ग से बेरोक–टोक विश्व के किसी भी देश में पहुँच रही है। . . . इस तरह हिन्दी को वैश्विक संदर्भ देने में उपग्रह–चैनलों, विज्ञापन एजेन्सियों, बहुराष्ट्रीय निगमों तथा यांत्रिक सुविधाओं का विशेष योगदान है। आज हिन्दी वैश्विक मीडिया की चहेती भाषाओं में से एक है। वह जनसंचार–माध्यमों की सबसे प्रिय एवं अनुकूल भाषा बनकर निखरी है। आज विश्व में सबसे ज्यादा पढ़े जाने वाले समाचार पत्रों में आधे से अधिक हिन्दी के हैं।''[7] ''2001 के आंकड़ों के अनुसार हिन्दी में 20,589 समाचार पत्रप्रकाशित होते हैं जबकि अंग्रेजी में 7,596 समाचार पत्र प्रकाशित होते हैं। प्रसार संख्या की दृष्टि से भी हिन्दी समाचार पत्र सर्वाधिक पढ़े जाते हैं। वर्ष 2001 में हिन्दी समाचार पत्रों की प्रसार संख्या 4,70,06,395 प्रतियां थीं जबकि अंग्रेजी की 2,30,94,261 प्रतियां। ये आंकड़े हिन्दी की जनप्रियता के पुष्ट प्रमाण हैं।''[8]आज ''वस्तुस्थिति यह है कि आज भारत उपमहाद्वीप ही नहीं बल्कि दक्षिण एशिया, खाड़ी देशों, अफ्रीका, यूरोप, कनाडा तथा अमेरिका तक हिन्दी

कार्यक्रम उपग्रह के जरिए प्रसारित हो रहे हैं और भारी तादाद में उन्हें दर्शक भी मिल रहे हैं। इस समय ब्रिटेन और लन्दन में बी०बी०सी० द्वारा प्रसारित हिन्दी कार्यक्रमों के श्रोता सबसे ज्यादा हैं। आज मॉरिशस में हिन्दी सात चैनलों के माध्यम से धूम मचाए हुए हैं। विगत कुछ वर्षों से एफ०एम० रेडियो के विकास से हिन्दी कार्यक्रमों का नया श्रोता वर्ग पैदा हो गया है। उसे ई–मेल, ई–कॉमर्स, ई–बुक, इन्टरनेट, एस०एम०एस० एवं वैब जगत में बड़ी सहजता से पाया जा सकता है।''[9]

विश्व के अनेक देशों के विश्वविद्यालयों में हिन्दी भाषा का अध्ययन–अध्यापन किया जाता है, जिनमें मॉरीशस, फीजी, जर्मनी, हॉलैंड, ब्रिटेन, अमेरिका, फ्रांस, आस्ट्रेलिया, थाईलैंड, उज्बेकिस्तान, तजाकिस्तान, कनाडा, चीन, जापान, रूस, हंगरी, पोलैंड आदि देश प्रमुख हैं। केवल अमेरिका के 80 से अधिक विश्वविद्यालयों में हिन्दी शिक्षण की सुविधा उपलब्ध है। हिन्दी की अन्तरराष्ट्रीय स्थिति पर प्रकाश डालते हुए 'गगनांचल' पत्रिका के संपादक श्री कन्हैयालाल नन्दन अपने सम्पादकीय में लिखते हैं– ''पिछले दिनों विश्व की एक स्तरीय और अन्तरराष्ट्रीय संस्था ने हिन्दी के अनेक रचनाकारों की कालजयी कृतियों के अनुवाद प्रकाशित करके अप्रत्यक्षतः हिन्दी की अन्तरराष्ट्रीयता को प्रमाणित किया है।''[10] डॉ० एम० एल० गुप्ता 'आदित्य' द्वारा लिए गए साक्षात्कार में जापान के प्रोफेसर तोमियो मिजोकामी ने मातृभाषा के संदर्भ में कहा है कि ''सबसे अच्छी अपने देश की भाषा होती है उसे मन से अपनाएँ। अपने देश की भाषा से ही देश का विकास होता है।''[11]

''आज अक्सर किसी भाषा की ताकत की पहचान इससे की जाती है कि वह बाजार में कितनी दौड़ सकती है। इसमें संदेह नहीं कि आज बाजार में हिन्दी का एक दमकता रूप है।''[12] इसमें कोई संदेह नहीं कि हिंदी अब बाज़ार और विपणन की भाषा बन चुकी है। हिन्दी को जनोन्मुख बनाने में सूचना तकनीक से जुड़े विशेषज्ञों ने बड़ी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। ''हिंदी का सबसे पहला पोर्टल 'नई दुनिया' अखबार ने बनाया जिसे 'वेब दुनिया डाट कॉम' कहते हैं। 'वेब दुनिया' की परिकल्पना इसी परिवार के आई०टी० इंजीनियर विनय छजलानी ने की थी। बी०आई०टी०, पिलानी के विनय ने हिंदी के लिए नये–नये सॉफ्टवेयर ईजाद किए। उन्होंने हिंदी में ई–मेल के लिए 'ई–पत्र', चैट के लिए 'ई–वार्ता', ग्रीटिंग्स के लिए 'कामना' और खोज के लिए 'वेबदुनिया खोज' नामक सर्च इंजन बनाए।''[13] भूमण्डलीकरण का प्रभाव हिंदी पर भी पड़ा है। ''भूमण्डलीकरण की उपभोक्तावादी संस्कृति ने हिंदी को भी प्रभावित किया है, अतः अब उसका बहुविध स्वरूप और प्रयोजनमूलक रूप उजागर हुआ है। अब हिंदी सृजन, राजभाषा व संपर्क भाषा के समांतर वह जनसंचार के साधनों में प्रचलित तकनीकी समृद्धि के अनुरूप आकाशवाणी, दूरदर्शन, कंप्यूटर, इंटरनेट और पत्रकारिता से होते हुए सेटेलाइट एवं डिजिटल क्रांति से भी संपृक्त हो चुकी है। आज हिंदी में ऐसे अनेक अंतर्राष्ट्रीय शब्द प्रचलित हो गए हैं जिनकी विश्व स्तर पर उपयोगिता है। आज उपभोक्ताओं की रूचि को ध्यान में रखकर साहित्य लिखा जा रहा है। विश्व बाजार सूचना तंत्र से संचालित है जो विज्ञापनों से अटे पड़े हैं।''[14]

वीरेन्द्र सिंह यादव अपने लेख 'वैश्विक परिदृश्य में राष्ट्रभाषा हिंदी की विकास प्रक्रिया' में हिंदी के महत्त्व पर प्रकाश डालते हुए लिखते हैं कि ''अपने विशाल शब्द भण्डार, वैज्ञानिकता, शब्दों और भावों को आत्सात की प्रवृत्ति के साथ हिन्दी ज्ञान विज्ञान की भाषा के रूप में अपनी उपयुक्तता एवं विलक्षणता के कारण आज हिन्दी को विश्व भाषा के रूप में सर्वत्र मान्यता मिल रही है।''[15]इसी सन्दर्भ में वे आगे लिखते हैं कि ''अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर हिन्दी की समृद्ध परम्परा दृष्टिगोचर प्रतीत होती है। अमेरिका सहित विश्व के अनेक राष्ट्रों के लगभग 176 विश्वविद्यालयों में हिन्दी का अध्ययन–अध्यापन जारी

है। विश्व में ऐसी भी जगह हैं जहाँ भारतीय मूल के लोग नहीं हैं तब भी वहाँ पर हिन्दी बोली जाती है।''[16] ''अभी हाल ही में गूगल के एक सर्वेक्षण में कहा गया है कि विगत एक वर्ष में सोशल मीडिया में हिन्दी के प्रयोग में 94 प्रतिशत का इजाफा हुआ है जबकि अंग्रेजी प्रयोग में केवल 19 प्रतिशत की वृद्धि हुई है। सन् 2008 के बाद जो कंप्यूटर बने हैं उनमें हिन्दी का स्वतः विधान किया गया है, उनमें अलग से 'सॉफ्टवेयर' डालने की जरूरत नहीं है। संक्षेप में, यह स्थापित सत्य है कि अंग्रेजी के दबाव के बावजूद हिन्दी बहुत ही तीव्र गति से विश्वमन के सुख–दुःख, आशा–आकांक्षा की संवाहक बनने की दिशा में अग्रसर है।''[17]

संक्षेप में, आज वे सारी सुविधाएँ जो विश्व की किसी भी भाषा के पास हैं, हिंदी में या तो उपलब्ध हैं अथवा बनने की प्रक्रिया में हैं। हिंदी न केवल 21वीं सदी की सबसे बड़ी और सबसे शक्तिशाली भाषा बनने जा रही है अपितु वह वर्तमान सदी की तमाम आकांक्षाओं एवं प्रवृत्तियों के निर्वहन का भी माध्यम बन रही है। वह दिलों को जोड़ने वाली अतिशय सरल और वैज्ञानिक भाषा है। वह अपनी सर्वसमावेशक क्षमता तथा सर्वग्राही स्वभाव के कारण निहित तमाम संभावनाओं का उदाहरण है।

सन्दर्भः–

1. डॉ० करुणाशंकर उपाध्याय, हिन्दी का विश्व संदर्भ, पृ० 11, राधाकृष्ण प्रकाशन नई दिल्ली–110002, दूसरा सं० : 2016
2. डॉ० माधव सोनटक्के, प्रयोजनमूलक हिंदी प्रयुक्ति और अनुवाद, पृ० 46–47, वाणी प्रकाशन, शाखा अशोक राजपथ, पटना, प्रथम संस्करण : 2015
3. डॉ० जोगेन्द्र सिंह, हिन्दी की विश्व व्याप्ति, पृ० 55, अनंग प्रकाशन, दिल्ली–110053, सं० 2006
4. डॉ० करुणाशंकर उपाध्याय, हिन्दी का विश्व संदर्भ, पृ० 13–14, राधाकृष्ण प्रकाशन नई दिल्ली–110002, दूसरा सं० : 2016
5. वही, पृ० 22–23
6. दैनिक भास्कर, 5 सितम्बर, 2017, पृ० 3
7. डॉ० करुणाशंकर उपाध्याय, हिन्दी का विश्व संदर्भ, पृ० 13–14, राधाकृष्ण प्रकाशन नई दिल्ली–110002, दूसरा सं० : 2016
8. वीरेन्द्र परमार, राजभाषा विमर्श, पृ० 9, नमन प्रकाशन, नई दिल्ली–110002, पहला सं० 2009
9. डॉ० करुणाशंकर उपाध्याय, हिन्दी का विश्व संदर्भ, पृ० 23, राधाकृष्ण प्रकाशन नई दिल्ली–110002, दूसरा सं० : 2016
10. गगनांचल, जुलाई–सितम्बर 1999, पृ० 10
11. तथ्यभारती, आर्थिक मासिकी पत्रिका, अक्टूबर 2017, वर्ष 23, अंक 5, पृ० 23
12. शंभुनाथ, भारतीय अस्मिता और हिन्दी, पृ० 69, सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम सं० 2012
13. वीरेन्द्र परमार, राजभाषा विमर्श, पृ० 10, नमन प्रकाशन, नई दिल्ली–110002, पहला सं० 2009
14. नीरज कुमार चौधरी, भूमंडलीकरण के दौर में हिंदी, भाषा विमर्श, अंक 19, दिसम्बर 2017, पृ० 27
15. वीरेन्द्र सिंह यादव, वैश्विक परिदृश्य में राष्ट्रभाषा हिंदी की विकास प्रक्रिया, रचनाकार ई–पत्रिका
16. वही
17. डॉ० करुणाशंकर उपाध्याय, हिन्दी का विश्व संदर्भ, पृ० 27, राधाकृष्ण प्रकाशन नई दिल्ली–110002, दूसरा सं० : 2016